United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

राजी सेठ कथा साहित्य में पारिवारिक नारी जीवन दर्शन

[1]सी.हेच दुर्गा भवानी
[2]डॉ हरिराम प्रसाद पसुपुलेटी
शेधार्थी , पिठापुर राजा शासकीय महाविद्यालय, महाविद्याल, आदिकवि नन्नाया विश्वविद्यालय से संबंद,

विषय प्रवेश:

आधुनिक हिंदी साहित्य में राजी सेठ जी साहित्य की सभी विधाओं में लिखती है| अब तक कहानी संग्रह और दो उपन्यास छपा चुके हँ| राजी सेठ के साहित्य में अनेक प्रकार की समस्याओं का भी अंकन किया गया है | जैसे विवाह समस्या , पारिवारिक समस्या , आर्थिक समस्यया , प्रमसमस्या, नारी समस्या आदि |

राजी सेठ जी ने आपने साहित्य में मध्यमवर्ग की आर्थिक और पारिवारिक जीवन में नारी पर बीती समस्याओं का चित्रण किया है | राजी सेठ जी ने आपने साहित्य के माध्यम से स्त्री सशक्तिकरण का कार्य किया | स्त्री को आपने पैर पर खडा कर आपनी जगह स्थापित करने की प्रेरणा दी है इस कारण ऐसे साहित्यकार पर शोध कार्य करना मेरी दृष्टी से महत्व पूर्ण होगा और हिंदी साहित्य के लिए भी उपयुक्त होगा |

प्राचीन काल से ही नारी किसी न किसी रूपों में व्यक्त हुही है कभी सीता बनकर तो द्रोपदी | पुरुष प्रधान संस्क्रति में उसके अस्तित्व को लेकर कई प्रश्नों ने सवाल खड़े कर दिए हैं प्रत्यक क्षत्र में शोषण नजर आया है | लेकिन समय के साथ स्त्री ने भी आपने अस्तित्व को पुनः स्थपित करने का प्रयास किया है | आधुनिका नारी की सामाजिक ,पारिवारिक, आर्थिक स्थिती, एवं गति को अपने अनुभव के दायरे के अंतर्गत जिन महिला साहित्यकारों ने साहित्य सृजन किया है | उन में राजी सेठ का नाम हिंदी साहित्य जगत में बड़े आदर से लिया जाता है| आज वर्तमान युग " महिला उत्थान युग " माना जाता है | आज की नारी अबला नहीं बल्कि सबला है |

विषय विस्तार :

परिवार हमारे समाज की आधारभूत इकाई है | इस में नारी की भूमिका सर्वधिक महत्वपूर्ण होती है | पर वह तो पारिवारिक द्वंद्वओं में जीती हुई संघर्षरत रहती है | " बाहर निकली स्त्री से परिवार के अंदर अंदर संघर्ष करती स्त्री ,रास्ता निकलती स्त्री का निर्णय भी स्त्री विमर्श का महत्वपूर्ण सरोकार है ,यह स्त्री टूटती नहीं , तनी हुई रस्सी पर चलने का रोमांच झेलती है " |

संयुक्त परिवारों के विघटन के कारण भारतीय स्त्री में विवाह के प्रति भी नविन दृष्टि उत्पन्न हुई | नैतिकता के प्रति मुक्त सोच ने स्त्री -पुरुष संबंधों की नवीन व्याख्या की | पारंपरिक जन समाज में भय त्रास, विघटन , आनिश्चतता , वर्गसंघर्ष की स्थितियों उत्पन्न हुई है | यातायात और

रोजगार के विकास ने मानवीय जीवन को विकासशील बनाने के साथ - साथ कम संत्रास्त नहीं बनाया है | महंगाई तथा उन्नत जीवन की लालसा के कारण पति-पत्नी दोनों कामकाज हो गये मध्यवर्गीय नारी अपने अधिकारों के प्रति सजग हुई | अतः उस में भी आर्थिक स्वतंत्रता की ललक उत्पन्न हो गयी | इसप्रकार समाज व परिवार की संरचना में बहुत परिवर्तन आ गए |

राजी सेठ की कहानियों में स्त्री -विमर्श राजी सेठ ने देर से लिकना आरंभ किया ,किन्तु थोडे ही समय में उन्होंने समकालीन लेकन में महत्वपूर्ण स्थान आर्जित कर लिया | उनकी कहानियों घर के अनुभव वृत्त को गहरी पहचान देने वाली कहानियाँ है , जिन में नारी की दासता की पूरी घुटन , छटपटहट , मर्यादाओं को ललकारे जाने की कसमसाहट , अन्तरिक टूटन , अस्मिता के प्रश्न बार बार सामने आते है | भले ही इन कहानियों का अनुभव वृत्त घर -परिवार की चारदीवारी का ही हो , किन्तु फिर भी पूर्णतः नया है

परिवार मानवीय सम्बन्धों का वह रंग मंच है जहा मनुष्य के विविध संबंधों की झलक मिलाती है | राजी सेठ का कथा – साहित्य जिंदगी से जुड़ा है | जिंदगी से हटकर वह लिख ही नहीं पाई | उनका कथा – साहित्य बदलते पारिवारिक स्वरूप के संदर्भ में , अलग -अलग कोणों को प्रस्तुत करता है |

पारिवारिक रिश्ते एक – दूसरे पूरक व संरक्षक होते हैं , इस दृष्टी से ' अनावृत्त कौन ' कहानी उल्लेखनीय है | स्त्री पति के माध्यम से नये रिश्तों की कड़ी से जुड़ती है और कभी – कभी तो ऐसा होता है कि पति से अधिक महत्वपूर्ण अन्य रिश्ते हो जाते हँ | यहाँ नवविवाहिता पत्नी घर के सारे सदस्यों के दु:ख व भावनाओं को समझते हुए सावधानी पूर्वक संयमित व्यवहार करती है | पति के साथ मनमुटाव होने के कारण वह मायके चली जाती है तो उसे लेने ससुरजी जाते हैं और वह परिवार में वापस आती है – उसे लगता है कि पापा [ससुरज] प्रकाश के तीरों की नुकीली चोटों के और उसके बीच खड़े हैं | उसे ढके हुए पूरी तरह से सुरक्षत किए हुए |

निष्कर्ष :

अतः राजी सेठ के स्त्री पात्र विद्रोह न करते हुए अपने स्त्रीत्व की रक्षा करते हुए और वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को नकारते हुए दिखाई देते है | इस दृष्टि से राजी सेठ अपनी समकालीन महिला रचनाकारों से सर्वथा भिन्न हैं | राजी सेठ के कथा – साहित्य में चरित्र – चित्रण की प्राय: सभी प्रचलित प्रणालियों का यथास्तान चित्रण देखने को मिलता है | उनकी चरित्र सृष्टि अभिनव है | नारी और पुरुष पात्रों के आतंरिक द्वंद्व को उन्होंने सूक्ष्म रूप से अभिव्यक्ति प्रदान की है |

उनके चरित्र वैज्ञानिक दृष्टि से भी सफल कहे जा सकते हैं पात्रों के चरित्र- चित्रण में उन्हें अद्भुत सफलता मिली |

संदर्भ ग्रन्ध सूची :

राजी सेठ _ तत्सम , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली , 1983 ई .. पृष्ट- 231
राजी सेठ _ तीसरी हथेली, पृष्ट 80
राजी सेठ का कथा- सह्हित्य : चिंतन और शिल्प ,डॉ .सरोज शुक्ल ,पृष्ट -291
राजी सेठ: संवेदना का कथा -दर्शन ,रमेश दवे ,पृष्ट 197